क्या हमारा धार्मिक विश्वास तर्क की बिनाह पर होना चाहिए?

“आज जहाँ देखो वहाँ, ऐसे ‘धार्मिक’ लोग हैं जिन्होंने सिर्फ इसलिए धर्म को अपना लिया है क्योंकि वे अपनी तर्क-शक्ति का बिलकुल इस्तेमाल नहीं करना चाहते।” यह बात अमरीका के एक सेमिनरी के अध्यक्ष ने लिखी। वह आगे कहता है: “वे बिना विचारे हर बात पर ‘विश्वास’ करना चाहते हैं।”

कहने का मतलब यह है कि धर्म को माननेवाले ज़्यादातर लोग कभी यह जानने की कोशिश नहीं करते कि वे जिन बातों पर विश्वास करते हैं उनका आधार क्या है, ना ही वे कभी परखकर देखते हैं कि उन्हें मानने का कोई ठोस सबूत मौजूद है या नहीं। इसलिए ताज्जुब नहीं कि आज ज़्यादातर लोगों को धर्म के बारे में बात करने में कोई दिलचस्पी नहीं है।

अफसोस की बात है कि धर्म में ऐसे कई रस्मों-रिवाज़ माने जाते हैं जिनमें दिमाग पर ज़ोर डालने की कोई ज़रूरत नहीं पड़ती, जैसे मूर्तियों की पूजा करना, रटी-रटायी प्रार्थनाएँ दोहराना वगैरह। आज करोड़ों लोगों के लिए धर्म का मतलब बस ऐसे ही रस्मों-रिवाज़, शानदार और भव्य इमारतें, उनके अंदर चारों ओर रंगीन काँच की बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ और भावनाओं को जगानेवाला संगीत है। कई चर्च दावा तो करते हैं कि उनका धर्म बाइबल पर आधारित है, मगर उनका यह संदेश कि ‘यीशु पर विश्वास रखिए, उद्धार पाइए’ लोगों को यही बताता है कि बाइबल का गहराई से अध्ययन करने की कोई ज़रूरत नहीं है। दूसरी तरफ, कुछ चर्च मसीही उसूलों की मदद से समाज की समस्याएँ दूर करने का प्रचार करते हैं। इन सबका नतीजा क्या निकला है?

धर्म के एक लेखक ने उत्तर अमरीका की हालत के बारे में कहा: “यहाँ मसीहियत . . . अब सिर्फ नाम के लिए रह गयी है [और] इसके माननेवालों को अपने धर्म के बारे में कुछ नहीं सिखाया जाता।” एक सर्वेक्षक ने तो अमरीका के बारे में यह कहा कि “बाइबल के ज्ञान के मामले में यह अनपढ़ों का देश है।” सच पूछो तो, ऐसे सभी देशों का यही हाल है जहाँ ज़्यादातर लोग ईसाई धर्म के हैं। ईसाई धर्मों के अलावा, दूसरे कई धर्मों में भी अपने विश्वास की जाँच-परख करने पर ज़ोर नहीं दिया जाता। उनमें तर्क करके और अच्छी तरह सोच-समझकर विश्वास करने का बढ़ावा देने के बजाय, मंत्र जपने, रिवाज़ों के मुताबिक पूजा-पाठ करने और रहस्यमयी बातों पर अलग-अलग तरीकों से चिंतन करने का बढ़ावा दिया जाता है।

लेकिन, यही लोग जो अपने धार्मिक विश्वासों की सच्चाई परखने की ज़रा भी कोशिश नहीं करते, वे ज़िंदगी के दूसरे मामलों में तो काफी सोच-समझकर फैसला करते हैं। क्या आपको यह बात अजीब नहीं लगती कि जो इंसान एक कार खरीदने के लिए उसके बारे में काफी पूछताछ करता है—जबकि एक दिन कार पुरानी होकर रद्दी के ढेर में चली जाएगी—वही अपने धर्म के बारे में ऐसा कहता है, ‘जब मेरे माँ-बाप को इस धर्म से कोई शिकायत नहीं थी, तो भला मुझे क्यों हो?’

अगर हम सचमुच परमेश्वर को खुश करना चाहते हैं, तो क्या हमें गंभीरता से नहीं सोचना चाहिए कि हम परमेश्वर के बारे में जो विश्वास करते हैं, वह वाकई सही है या नहीं? प्रेरित पौलुस ने अपने समय के कुछ धार्मिक लोगों के बारे में कहा कि “उन को परमेश्वर के लिये धुन रहती है, परन्तु बुद्धिमानी के साथ नहीं।” (रोमियों 10:2) ऐसे लोगों की तुलना मज़दूरी पर काम करनेवाले एक पुताईवाले से की जा सकती है, जिसने एक घर की दीवारों पर रोगन लगाने के लिए खूब मेहनत तो की है, मगर

उसने गलत रंग इस्तेमाल किए क्योंकि उसने अपने मालिक की हिदायतें ध्यान से नहीं सुनी थीं। पुताईवाला शायद अपने काम से खुश हो, लेकिन क्या उसके मालिक को तसल्ली होगी?

अब सवाल यह उठता है कि परमेश्वर किस तरह की उपासना स्वीकार करता है? बाइबल इसका जवाब देती है: "यह हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर को अच्छा लगता, और भाता भी है। वह यह चाहता है, कि सब मनुष्यों का उद्धार हो; और वे सत्य को भली भांति पहचान लें।" (1 तीमुथियुस 2:3, 4) कुछ लोग शायद सोचें कि आज इतने सारे धर्म हैं कि सत्य की ऐसी पहचान करना नामुमकिन है। लेकिन ज़रा सोचिए, अगर यह परमेश्वर की इच्छा है कि लोग सत्य को भली भांति पहचान लें तो क्या वह जानबूझकर इस सच्चाई को उनसे छिपाए रखेगा? बाइबल के मुताबिक जवाब है नहीं, क्योंकि यह कहती है: "यदि तू [परमेश्वर की] खोज में रहे, तो वह तुझ को मिलेगा।" —1 इतिहास 28:9.

जो लोग सच्चे दिल से परमेश्वर की खोज करते हैं, उन पर वह अपना ज्ञान कैसे प्रकट करता है? इसका जवाब अगला लेख देगा।

अपने दिल और दिमाग से परमेश्वर की खोज करें

सच्ची मसीहियत लोगों को सिखाती है कि कैसे दिल और दिमाग से काम लेकर ऐसा विश्वास पैदा किया जा सकता है जिससे परमेश्वर प्रसन्न हो।

दरअसल, मसीहियत को शुरू करनेवाले, यीशु मसीह ने सिखाया कि हमें अपने "पूरे दिल" और अपनी "पूरी जान" के साथ-साथ "पूरे दिमाग" या सोचने-विचारने की शक्ति से भी परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए। (मत्ती 22:37, *NW*) जी हाँ, उपासना में हमारी दिमागी ताकत एक अहम भूमिका निभाती है।

यीशु, लोगों को सिखाते वक्त उन्हें उसकी शिक्षाओं पर गहराई से सोचने के लिए उकसाता था। इसलिए वह अकसर उनसे पूछता था: "तुम क्या समझते हो?" (मत्ती 17:25; 18:12; 21:28; 22:42) उसी तरह, प्रेरित पतरस ने अपने मसीही भाई-बहनों को इसलिए खत लिखा ताकि वह 'उनकी साफ सोच को उभार सके।' (2 पतरस 3:1, *NW*) पहली सदी में मिशनरी सेवा में सबसे ज़्यादा यात्राएँ करनेवाले प्रेरित पौलुस ने, मसीहियों को उकसाया कि वे "अपनी तर्क-शक्ति" (*NW*) का इस्तेमाल करें और 'परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहें।' (रोमियों 12:1, 2) अपने विश्वासों के बारे में इस तरह ध्यान से और गहराई से जाँच करने पर ही मसीही ऐसा विश्वास पैदा कर सकते हैं, जिससे परमेश्वर खुश होता है और जिससे उन्हें जीवन की परीक्षाओं का सामना करने की हिम्मत मिलेगी।—इब्रानियों 11:1, 6.

पहली सदी के मसीही प्रचारक, दूसरों को ऐसा विश्वास बढ़ाने में मदद देने के लिए "उनके साथ शास्त्र से तर्क करते और हवाले दे-देकर" उन्हें अपनी बात "समझाते और साबित करते थे।" (प्रेरितों 17:1-3, *NW*) समझाने का ऐसा सही तरीका अपनाने की वजह से कई नेक दिल के लोगों ने उनका संदेश स्वीकार किया। मसलन, मकिदुनिया के बिरीया शहर में कई लोगों ने "बड़ी लालसा से [परमेश्वर का] वचन ग्रहण किया, और प्रति दिन पवित्र शास्त्रों में ढूंढ़ते

किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब [मौजूदा दुनिया का] अन्त आ जाएगा।”—मत्ती 24:14.

आज संसार भर में करीब 60 लाख यहोवा के साक्षी दूसरों को यह सुसमाचार सुना रहे हैं। वे आपको भी न्यौता देते हैं कि आप अपनी तर्क-शक्ति का इस्तेमाल करके ‘पवित्र शास्त्रों में ढूंढ़कर’ परमेश्वर और उसके राज्य के बारे में अपना ज्ञान बढ़ाएँ। ऐसा करने से आपका विश्वास मज़बूत होगा और धरती पर फिरदौस में जीने की आशा आपके दिल को खुशियों से भर देगी। जब यह धरती एक फिरदौस बन जाएगी, तब यह “यहोवा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसा जल समुद्र में भरा रहता है।”—यशायाह 11:6-9.

“हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए . . . ”

“तेरा [मसीहाई] राज्य आए . . . ”

क्या आप यीशु की आदर्श प्रार्थना का मतलब जानते हैं?

“तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो”

महान शिक्षक की मिसाल पर चलिए

यीशु लोगों को सिखाते वक्त अकसर बाइबल के किसी एक विषय को लेकर बात करता था। उदाहरण के लिए, उसने अपने पुनरुत्थान के बाद, उसकी मृत्यु को लेकर उलझन में पड़े दो शिष्यों को समझाया कि परमेश्वर का उद्देश्य पूरा करने में वह कौन-सी भूमिका निभाता है। लूका 24:27 कहता है: "उस ने मूसा से और सब भविष्यद्वक्ताओं से आरम्भ करके सारे पवित्र शास्त्रों में से, अपने विषय में की बातों का अर्थ, उन्हें समझा दिया।"

ध्यान दीजिए कि यीशु ने बात करने के लिए एक विषय चुना। उसने मसीहा के बारे में, जी हाँ, "अपने विषय में" बात की। और उसने अपनी बातचीत में "सारे पवित्र शास्त्रों में से" हवाला देकर समझाया। जिस तरह एक तसवीर के अलग-अलग भागों को साथ जोड़ने पर पूरी तसवीर बन जाती है, उसी तरह यीशु ने अपने विषय से जुड़े बाइबल के अलग-अलग हवालों को साथ जोड़ा ताकि उसके चेले उस सच्चाई को समझ सके जो खरी शिक्षा का आदर्श है। (2 तीमुथियुस 1:13) नतीजा यह हुआ कि उन्होंने न सिर्फ ज्ञान की रोशनी पायी बल्कि इस ज्ञान का उनके दिल पर भी गहरा असर पड़ा। वृत्तांत हमें बताता है: "उन्हों ने आपस में कहा; जब वह मार्ग में हम से बातें करता था, और पवित्र शास्त्र का अर्थ हमें समझाता था, तो क्या हमारे मन में उत्तेजना न उत्पन्न हुई?" —लूका 24:32.

यहोवा के साक्षी, अपनी सेवकाई में यीशु के सिखाने का तरीका अपनाने की कोशिश करते हैं। वे अध्ययन में खासकर, *परमेश्वर हमसे क्या माँग करता है?* ब्रोशर और किताब, *ज्ञान जो अनन्त जीवन की ओर ले जाता है* इस्तेमाल करते हैं। इनमें बहुत-से दिलचस्प बाइबल विषयों पर चर्चा की गयी है, जैसे "परमेश्वर कौन है?," "परमेश्वर दुःख को अनुमति क्यों देता है?," "आप सच्चे धर्म का कैसे पता लगा सकते हैं?," "ये अन्तिम दिन हैं!" "ऐसा परिवार बनाना जो परमेश्वर को महिमा देता है।" हर पाठ में बाइबल की ढेरों आयतें दी गयी हैं।

हम आपसे गुज़ारिश करते हैं कि आप यहाँ बताए गए विषयों और दूसरे विषयों के बारे में अपने घर पर मुफ्त बाइबल अध्ययन करने के लिए अपने इलाके में रहनेवाले यहोवा के साक्षियों से संपर्क करें या इस पत्रिका के पेज 2 पर दिए पते पर खत लिखें।

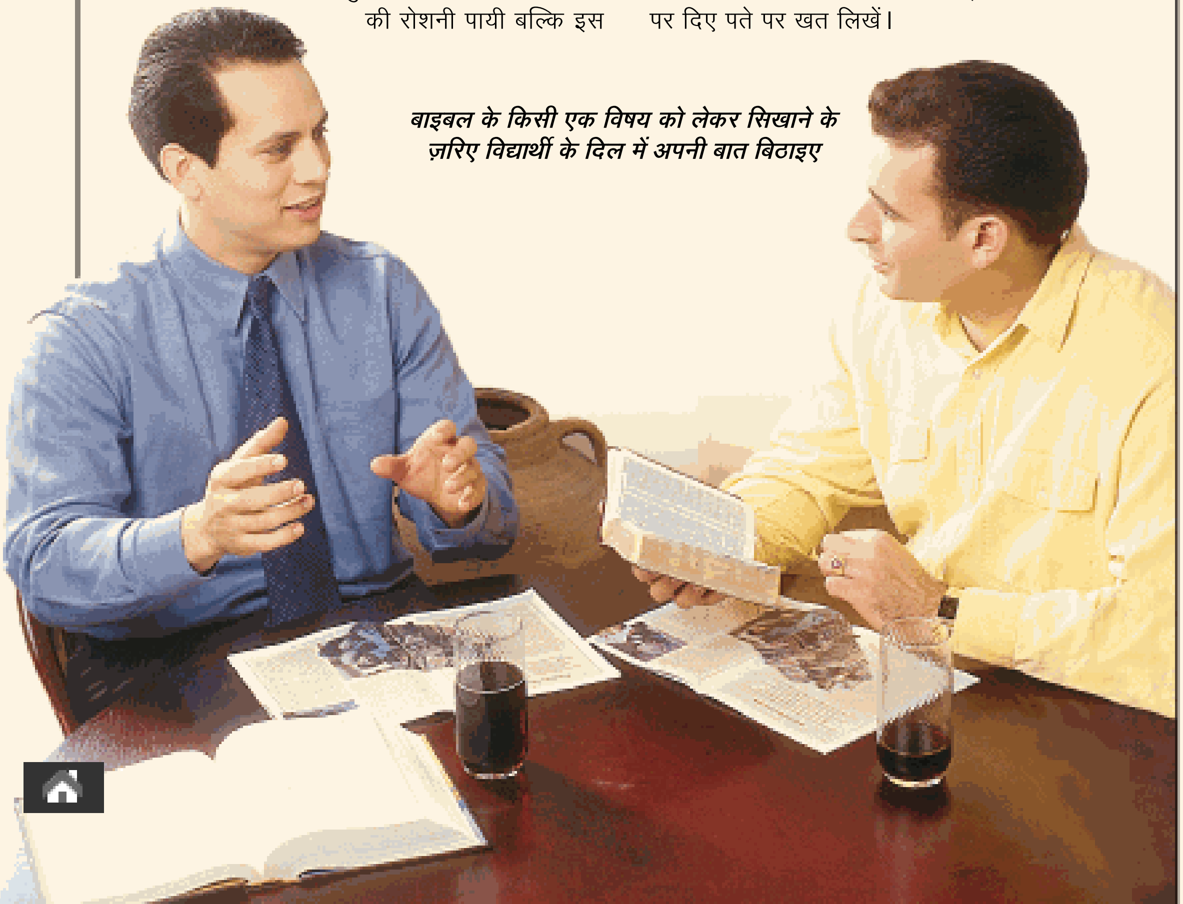

बाइबल के किसी एक विषय को लेकर सिखाने के ज़रिए विद्यार्थी के दिल में अपनी बात बिठाइए